















# अमेरिकी बैंक क्यों हो रहे दिवालिया?



प्रह्लाद सबनानी

पूंजीवाद पर आधारित आर्थिक नीतियां अमेरिका ने बैंकिंग क्षेत्र में उत्पन्न समस्याओं का हल नहीं निकाल पा रही हैं। जब तो अमेरिकी

हा अब ता अनाएका  
अर्थशास्त्री भी मानने लगे हैं  
कि आर्थिक समस्याओं के  
संदर्भ में साम्यवाद के बाद  
पुंजीवाद भी असफल होता  
दिखाई दे रहा है एवं आज  
विश्व को एक नए आर्थिक  
मॉडल की आवश्यकता है।  
इन अमेरिकी अर्थशास्त्रियों  
का स्पष्ट इशारा भारत की  
ओर है क्योंकि इस बीच  
भारतीय आर्थिक दर्शन पर  
आधारित मॉडल भारत में  
आर्थिक समस्याओं को हल  
करने में सफल रहा है।

संपादकीय

## सहभागी और सक्रिय अदालतें



संजय गोखार्मी

द श में पहला लोकसभा चुनाव 25 अक्टूबर 1951 से लेकर 21 फरवरी 1952 तक चला था। उस समय पूरे देश में चुनाव कराया एक जटिल प्रक्रिया थी। सबकुल नया भी था। भारत के पहले चुनाव आयुक्त सुकुमार सेन थे। चुनाव आयोग के पास बड़ी जिम्मेदारी थी। देश का पहला आम चुनाव 68 चरणों में कराया गया था। पहले इलेक्शन कमिशन ने तय किया था कि वोटिंग 1952 के फरवरी और मार्च महीने में होगी। लेकिन हिमाचल प्रदेश की चिनी तहसील के लोगों को अक्टूबर 1951 में ही मौका मिल गया, क्योंकि सर्दियों में बर्फबारी के चलते यह इलाका बाकी जगहों से कट जाता है। देश के पहले लोकसभा चुनाव में 401 निर्वाचन क्षेत्रों की कुल 489 सीटों के

**कप्ति** ग्रेस नेता राहुल गांधी उत्तर प्रदेश की अमेठी लोकसभा सीट से चुनाव न लड़ पाने की हिमत के बाद आखिर परम्परागत रायबरेली से नामांकन दाखिल कर दिया। यह बात सही है कि राहुल गांधी के अमेठी छोड़ने के बाद कांग्रेस राजनीति में कोई ठोस सन्देश देने में सफल नहीं हो रही थी, जिसके कारण कांग्रेस के कई नेता अमेठी के बारे में बोलने से किनारा करने लगे थे। अब राहुल गांधी अपने दादा फिरोज खान, दादी इंदिरा गांधी और मां सोनिया गांधी की विरासत को बचाने के लिए मैदान में आ गए हैं। यहां सवाल यह नहीं है कि राहुल गांधी और उनकी कांग्रेस ने रायबरेली को क्यों चुना, बल्कि सवाल यह है कि राहुल गांधी ने अमेठी को क्यों छोड़ा।

क्या वास्तव में राहुल गांधी को फिर से अपनी पराजय का डर लगने लगा था? अगर यह सही है तो फिर ऐसा क्यों है कि राहुल गांधी हर बार अपने लिए सुरक्षित स्थान की तलाश क्यों करते हैं। उल्लेखनीय है कि जब कांग्रेस नेता राहुल गांधी को अमेठी में अपनी जमीन खिसकती दिखाई दी, तब उन्होंने एकदम सुरक्षित लगने वाली सीट केरल की वायनाड को चुना। वहां से चुनाव जीते जरूर, लेकिन अमेठी की हार कांग्रेस परिवार की हार थी, जिसे कांग्रेस आज तक भुला नहीं पाई है। ऐसे में कांग्रेस द्वारा राहुल गांधी को अमेठी से चुनाव लड़ाना खतरे से खाली नहीं था।

कांग्रेस की ओर से राहुल गांधी के नामांकन जमा करने के समय जिस प्रकार से बड़े नेताओं का जमघट लगा, वह भले ही जनता में प्रभाव डालने के लिए किया हो, लेकिन इससे यह भी राजनीतिक सन्देश मुनाई दे रहा है कि अब रायबरेली की सीट भी कांग्रेस के लिए आसान नहीं है। यह इसलिए भी कहा जा सकता है कि वहां लगभग सभी बड़े नेता उपस्थित हुए। यहां तक कि प्रियंका गांधी वाड़ा के पांती रोबर्ट वाड़ा भी कांग्रेस के विरासती राजनेता के तौर पर उपस्थित हुए।

ऐसे में एक सवाल यह भी आता है कि एक ही परिवार के चार व्यक्तियों को कांग्रेस के बड़े नेताओं के रूप में प्रचारित करना निसदैन कांग्रेस पर परिवारवादी होने

प्रिंटन-मनन

## व्यापारी के बेटे

एक व्यापारी के दो पुत्र थे। मरने से पहले उसने अपनी संपत्ति दोनों बेटों में बराबर-बराबर बाट दी। एक पुत्र ने अपने व्यापार को काफी बढ़ाया वह अत्यंत संपन्न होकर समाज के प्रतिष्ठित लोगों में गिना जाने लगा। जबकि दूसरे को व्यापार में घाटा हो गया और उसके परिवार को दो जनन की रोटी जुटाने में भी अत्यंत तकलीफें उठानी पड़ीं। अपने भाई की तरक्की और अपनी दुर्दशा देखकर दूसरा भाई एक संत के आश्रम में पहुंचा और बोला, महाराज, मुझे लगता है कि इश्वर केवल कल्पना है और यदि उसका अस्तित्व कहीं है भी तो वह पक्षपाती है। क्या वह भी पक्षपात करता है? मैं और मेरे भाई दोनों एक ही पिता की संतान हैं। पिता ने दोनों को बराबर हिस्सा दिया। लेकिन वह लगातार तरक्की कर रहा है और मैं रसातल की ओर जा रहा हूँ। भला ऐसा क्यों?

उसकी बात सुनकर संत उसे अपने साथ एक बगीचे में ले गए और बोले, देखो, वहां एक कोने में गना बोया हुआ है, दूसरे कोने में चिरायता है, एक ओर चमेली के फूल अपनी सुगंध बिखरे रहे हैं तो दूसरी ओर गुलाब के पौधों पर फलों के साथ कटे भी नजर आ रहे हैं। इनकी इस भिन्नताके लिए इन्हें पैदा करने वाली जमीन दोषी या पक्षपाती नहीं है। जैसा बीज बोया गया है वैसा ही फल मिला है। सुख-दुख और उन्नति-अवनति के लिए इश्वर जिम्मेदार नहीं बल्कि स्वयं मनुष्य जिम्मेदार है। उसके कर्म और संस्कार जिम्मेदार हैं। तुम्हारे भाई ने मेहनत और योग्यता से अपने काम को संभाला तो उसकी उन्नति होती गई, इसके विपरीत तुमने आलस्य और भोग-विलास में अपना समय व्यतीत किया तो तुम्हारा धन धीरे-धीरो खत्म होता गया। तुमने मेहनत की ही कब थी जो इश्वर की दोष दे रहे हो। जैसा कर्म तुमने किया है वैसा ही फल पाया है। ह सुनकर दूसरे पुत्र की आंखें खुल गईं। वह अपनी गलती सुधारने का निश्चय कर वहां से चला आया।



# मताधिकार का प्रयोग अवश्य करें

लिए मतदान हुआ था। तब बैलेट पेपर पर चुनाव हुआ करता था संविधान हमें वोट देने का अधिकार देता है, जो एक मौलिक अधिकार है जिसका प्रयोग भारत के सभी नागरिकों को करना चाहिए। मतदान प्रतिशत में गिरावट को रोकने के लिए वर्तमान राजनीतिक रुझानों और प्रणालियों में आमूल-चूल परिवर्तन की आवश्यकता है। मतदान करते समय सतर्क रहना और सोच-समझकर निर्णय लेना महत्वपूर्ण है। हाल के

चुनावों के नतीजों में मतदाता मतदान में कमी देखी गई है, जिससे यह सुनिश्चित करने के लिए व्यापक बदलावों की आवश्यकता पर प्रकाश डाला गया है कि मतदाताओं को सरकार में एक सच्चा प्रतिनिधि मिले। भारत में लोकसभा चुनाव 19 अप्रैल से शुरू होकर और 1 एक जन तक वोटिंग होगी। सात फेज में इलेक्शन होंगे और 4 जून को नतीजे आएंगे। लेकिन ये बात भी गौर करने वाली है कि इस बार लोकसभा

# 'राहुल गांधी, आसान नहीं रायबरेली की डगर...!'



को ही प्रमाणित करता है। जिस परिवारवाद के आरोप के कारण कांग्रेस असहज हो जाती है, आज कांग्रेस ने फिर से उसी रास्ते पर कदम बढ़ाने को अपनी नियति मान लिया है। हालांकि कांग्रेस ने आनन-फानन में राहुल गांधी को रायबरेली से उम्मीदवार बनाकर यह तो सन्देश दिया ही है कि भारत में रायबरेली ही राहुल गांधी के लिए सबसे मुश्किल लोकसभा सीट है। यहां कांग्रेस का परम्परागत मतदाता है, वहीं यह क्षेत्र नेहरू-गांधी परिवार की विरासत भी है।  
कहा जाता है कि दुनिया का कोई भी व्यक्ति अगर अपनी विरासत को विस्तृत कर देता है, तो उसे नए सिरे से अपनी जमीन तैयार करनी पड़ती है। और अगर विरासत के आधार पर अपने कदम बढ़ाता है तो उसकी आधी राह आसान हो जाती है। राहुल गांधी के सामने तमाम सवाल होने के बाद भी ऐसा लगता है कि उन्होंने अपनी आधी बाधा को पार कर लिया है। रायबरेली को कांग्रेस का गढ़ इसलिए भी माना

चुनाव के लिए मतदान की प्रक्रिया 44 दिनों में पूरी होगी जो 1951-52 के पहले संसदीय चुनाव के बाद मतदान की सबसे लंबी अवधि होगी। बता दें कि पहले चुनाव में वोटिंग 4 महीने से अधिक समय तक चली थी। इस बार निर्वाचन आयोग द्वारा चुनाव की घोषणा से लेकर मतदान होने तक तक चुनाव प्रक्रिया कुल 82 दिनों में पूरी होगी। मतदान न केवल एक अधिकार है बल्कि एक कर्तव्य भी है जो हमारे देश के भविष्य को आकार देने में मदद करता है। इसमें सरकारों को बदलने, देश को बेहतर बनाने और सामाजिक परिवर्तन लाने की शक्ति है। मतदान करके, हम उन प्रतिनिधियों को चुनते हैं जो हमारे देश पर शासन करते हैं, इसलिए हमारे देश के विकास के लिए सभी नागरिकों के लिए इस प्रक्रिया में भाग लेना महत्वपूर्ण है। मतदान हमें उस प्रकार की सरकार में अपनी भाव कहने का अधिकार देता है जो हम चाहते हैं और देश की प्रगति में योगदान करते हैं। यह हमें महिलाओं, बच्चों और हाशिए पर रहने वाले समुदयों के अधिकारों की विकालत करने में भी सक्षम बनाता है। स्कूलों और कॉलेजों में जागरूकता अभियान छात्रों को लोकतंत्र में मतदान के महत्व के बारे में शिक्षित करते हैं। सभी के लिए जरूरी है कि वे अपने मताधिकार का प्रयोग करें और देश के विकास में अपना योगदान दें।

उत्तर प्रदेश का राजनीतिक परिदृश्य बदला हुआ है। अब कांग्रेस के पास पहले जैसा वोट बैंक भी नहीं है, हालांकि इस चुनाव में सपा का समर्थन कांग्रेस के पास है, इसलिए चुनाव में सपा के कार्यकर्ता भी राहुल का प्रचार करेंगे, ऐसे में निश्चित ही कांग्रेस का वजूद बढ़ेगा ही, यह तय है, लेकिन कितना बढ़ेगा, यह कहने में जल्दबाजी ही होगी।

वर्तमान में कांग्रेस के लिए यह पेचीदा सवाल ही था कि कांग्रेस की ओर से अमेठी और रायबरेली से किसको उमीदवार घोषित किया जाए, क्योंकि इन दोनों सीटों पर प्रथम तो गांधी परिवार का पुखा दावा बनता था। इसलिए दोनों क्षेत्रों में से किसी एक से

प्रियका वाड़ा को चुनाव मेदान में उत्तरसे को कवायद भी की जा रही थी, लेकिन प्रियका को इस बार चुनाव लड़ने से दूर कर दिया। लेकिन सवाल यह भी उठ रहा है कि क्या राहुल गांधी के रायबरेली से उम्मीदवार बनाए जाने के बाद कांग्रेस अमेठी के चुनाव को गंभीरता से लेगी, क्योंकि अब कांग्रेस का पूरा जोर राहुल गांधी को जिताने में लगेगा।

राहुल गांधी को जिताना कांग्रेस की मजबूरी है, क्योंकि अब राहुल गांधी ही नहीं, पूरी कांग्रेस को साख दांव पर लगी है। अगर कांग्रेस रायबरेली से चुनाव हारती है तो देश में कांग्रेस के बारे में गलत सन्देश जाएगा। यहां पर एक महत्वपूर्ण प्रश्न यह भी आ रहा है कि राहुल गांधी द्वारा पिछले चुनाव में भी दो स्थानों से चुनाव लड़े थे, जिसमें अमेठी में उन्हें हार का सामना करना पड़ा। अब वायनाड से उम्मीदवारी के बाद रायबरेली की रुख करके फिर से संदेह को जन्म दिया है। ऐसा लग रहा है कि इस बार वायनाड का चुनाव बहुत ही टक्कर का माना जा रहा है। कुछ खबरें तो राहुल गांधी के हारने तक की बात कह रही हैं। कहाँ ऐसा तो नहीं कि इसलिए ही राहुल गांधी को फिर से दो स्थानों से चुनाव लड़ाया जा रहा है। राहुल गांधी का उत्तर प्रदेश से चुनाव लड़ाना कोई नया नहीं है, वे अमेठी से भी चुनाव लड़ चुके हैं। इसलिए उनके नाम का जातू कोई नया प्रभाव छोड़ेगा, यह पूरी तरह विश्वास के साथ नहीं कहा जा सकता।





## टॉविसक में करीना की जगह लेंगी नयनतारा!

सफल केजीएफ फँचाइजी में अपनी भूमिका के लिए प्रसिद्ध यश ने दो आगामी फ़िल्मों में अपनी भूमिका की पुष्टि की है। इनमें से एक गीतू-मोहनदास द्वारा निर्देशित टॉविसक और दूसरी नितेश तिवारी द्वारा निर्देशित रामायण है। टॉविसक का फ़िल्मांकन वर्तमान में प्रगति पर है। यश, नितेश तिवारी की रामायण के साथ इस फ़िल्म का सह-निर्माण भी कर रहे हैं। इससे बीच खबर आई कि किरदार के लिए दमदार साउथ हस्तीना का नाम सामने आया है, जिसने फैस के उत्साह को और ज्ञाना द्वारा दिया है। टॉविसक के लिए कारिंग के संबंध में रोमांचक घटनाक्रम सामने आए हैं। रिपोर्ट से पता चलता है कि गीतू-मोहनदास की फ़िल्म में यश की बहन की भूमिका के लिए प्रसिद्ध यश अभिनेत्री नयनतारा से बातचीत चल रही है। जानकारी हो कि नयनतारा को लेती सुपरस्टार भी कहा जाता है। ऐसे में वो अगर इस फ़िल्म का हिस्सा बनेंगी तो निश्चित रूप से फैस और भी ज्यादा उत्साहित होंगे।

मीडिया रिपोर्ट के अनुसार, गीतू-मोहनदास और यश ने हाल के हातों में नयनतारा के साथ कई चर्चाओं की हैं और बातचीत सकारात्मक रूप से आगे बढ़ रही है।

नयनतारा ने इस भूमिका में गहरी रुचि दिखाई है। फिल्मांकन के दौरान नयनतारा के साथी व्यवस्थाओं पर कोंक्रिट है। एक मजबूत महिला के रूप में वर्णित चरित्र, नयनतारा के ऑन-स्क्रीन व्यक्तित्व के साथ अच्छी तरह मेल खाता है और वह कथित तौर पर गीतू-मोहनदास के महिला पात्रों के विक्रान्त से प्रभावित है। गीतू-मोहनदास और यश दोनों नयनतारा के टॉविसक के कलाकारों में शामिल होने की संभावना से उत्साहित हैं।

विवरणों को अंतिम रूप देने के प्रयत्न चल रहे हैं और अगर सब कुछ सुधार रूप से चला तो नयनतारा के अंगों दो साथों के भीतर अधिकारिक तौर पर वोर्ड पर आने की उम्मीद है। टॉविसक, 10 अप्रैल, 2025 को रिलीज होने वाली है, जिसमें यश के साथ कियारा आडवाणी मुख्य भूमिका में है। वह वस्त्रों के लिए एक परी कथा के नाम से मशहूर इस फ़िल्म ने अपनी धोषणा के बाद से ही काफी ध्यान आकर्षित किया है। मख्य कलाकारों के अलावा, फ़िल्म सभी पात्रों के अंतिम रूप से चल रही है, जिसके बारे में अधिक जानकारी की प्रीव्यू सकारात्मक रूप से उत्सुकता से प्रीव्यू की जा रही है।

## 50 साल की उम्र पार कर चुकी हैं ये अभिनेत्रियां, खूबसूरती में नई हीरोइनों को भी देती हैं मात

बॉलीवुड अभिनेत्रियों की खूबसूरती के चर्चे विश्वारूप में हैं। भारतीय अभिनेत्रियों में मिस वर्ल्ड से लेकर मिस यूनिवर्स तक का खिलाफ़ जीतकर देश का मान बढ़ाया है। हिंदी सिनेमा की अभिनेत्रियों की आदा और खूबसूरती पर उनके प्रशंसक जान छिपकते हैं। बॉलीवुड की कुछ ऐसी भी चुनिंदा अभिनेत्रियों हैं जिनके ऊपर उम्र का भी काँचे खास असर नहीं है। उनकी खूबसूरती को बहुत आकर्षक मान दिया जाता है। यहाँ तक की सुदरता में वह नई हीरोइनों की टक्कर देती है। आज हम ऐसी ही अभिनेत्रियों के बारे में बात करेंगे जिनकी उम्र तो 50 साल के पार हो गई है पर उन्हें देखकर आज भी उनके प्रशंसकों का दिल धड़क उठता है।

### माधुरी

बॉलीवुड में 'धक-धक गर्ल' के नाम से मशहूर अभिनेत्री माधुरी दीक्षित की खूबसूरती बेमिल है। उनकी डांस के लाखों दिवाने हैं। अपने करियर की शुरुआत तो माधुरी ने 'अबोवॉ' नाम की फ़िल्म से किया था, लेकिन उन्हें पहलान फ़िल्म तेजाब से मिली। फ़िल्म 'तेजाब' के आइटम सॉन्ग 'एक दो तीन' से उन्हें धर-धर पहलान मिल गई। उस दौर में हर किसी की जुबान पर माधुरी का गाना रहता था। 56 साल की अभिनेत्री इस उम्र में भी नौजवान हीरोइनों को खूबसूरती के मामले में पीछे छोड़ देती है। उनकी अदा, डांस और खूबसूरती के आज भी लाखों दिवाने हैं।

### भाग्यश्री

भाग्यश्री ने बॉलीवुड में सलमान खान की फ़िल्म 'मैंने यार किया' से डेढ़ू किया था। अभिनेत्री की खूबसूरती और मास्यांतर के उनके फैस कायल हैं। उन्होंने अपनी पहली फ़िल्म के लिए बहुत आसानी पर किया है। भाग्यश्री ने बॉलीवुड के अंदर आंदोलन के लिए फैस कायल है।



### संगीता बिजलानी

संगीता बिजलानी ने 16 साल की उम्र में मॉडलिंग शुरू कर दी थी। अभिनेत्री ने 1980 में मिस इंडिया यूनिवर्स का खिलाफ़ भी जीता। बॉलीवुड में उन्होंने आदिवायंगोली की फ़िल्म 'देव्यू' से डेढ़ू किया। संगीता की खूबसूरती के भी उनके प्रशंसक कायल हैं। 63 साल की अभिनेत्री आज भी देखने में बेहद खूबसूरत है।

आप 30 वर्ष की उम्र तक पहुंचते हैं, तो आपके लिए घर बसाने का समय आ जाता है क्योंकि

आपका करियर खत्म हो जाता है।

रामायण को लेकर चर्चा में है

इस बीच, लारा दत्ता नितेश तिवारी की रामायण में

कैफ़ीयती की भूमिका का लेकर भी काफ़ी चर्चा में

चल रही है। अभिनेत्री ने इन अफ़वाहों पर

प्रतिक्रिया देने वाले कहा कि उन्होंने ऐसी कंड

रिपोर्ट्स सुनी हैं, लेकिन वह अटकोंका आनंद

ले रही है, उन्होंने खूबी लेते हुए कहा, कौन

रामायण का हिस्सा नहीं बनना चाहता है।

सीरीज को लेकर मिल रही हैं तारीफ़ों

अभिनेत्री के वर्क फॉट की बात करें तो हाल ही में,

वे 'रामानीति-बालाकोट एंड बियाँड़' में नजर आई हैं। यह सीरीज 25 अप्रैल को स्ट्रीम हुई है। लारा

दत्ता के साथ इसमें जिमी शेरगिल, आशुतोष राणा

और आशीष विद्यार्थी समेत कई अन्य कलाकार हैं। इसके अलावा उनके पास वेलकम ट ड जंगल

और रामायण जैसी फ़िल्मों में

## वरुण-जाह्नवी की फ़िल्म में अहम भूमिका निभाएंगे अक्षय ओबेरोय

अभिनेता अक्षय ओबेरोय कथित तौर पर आगामी रोमांटिक कॉमेडी सनी संस्कारी की तुलसी कुमारी के लिए बोर्ड पर आ गए हैं। शास्त्रांक खान द्वारा निर्देशित इस फ़िल्म में डायनामिक जड़ी वरुण धनव और जाह्नवी कौर मुख्य भूमिका में हैं। बीते दिन इस फ़िल्म से रोहत सराफ़ और सान्या मल्होत्रा के जुड़ने की खबर सामने आई थी। फ़िल्म पर आ रहा लातार नया अपेटेंट फैस के उत्पाह को बढ़ा रहा है। फ़िल्म सनी संस्कारी की तुलसी कुमारी में अक्षय ओबेरोय के शामिल होने की खबर अैनलाइन जारी की। ओबेरोय फ़िल्म से जुड़े की थी। फ़िल्म पर आ रहा लातार सान्या कौर और जाह्नवी कौर पर आ रहा लातार हो गया। यह एक महावृणु भूमिका निभाएंगे और बदल सुनिधि भूमिका निभाएंगे। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक फ़िल्म की शृंखला शुरू हो चुकी है। हालांकि, ये किसी को नहीं पता है कि फ़िल्म की शृंखला कहाँ पर हो रही है। रोशन मीडिया पर राम सीता के साथ बैटमैट हो रहे हैं। राम सीता के साथ एक बदल सुनिधि भूमिका निभाने के लिए उत्साहित हूं। यह टेढ़ा साल बैटमैट ही अद्भुत हो रहा है, क्योंकि मैंने फैली बार मा नीति सिंह कौर पर के साथ अपनी तस्वीर साझा की थी। इसके बाद एक बैट सोरीर के साथ कारिंग का काम किया गया है। रामायण में राणीबर कौर के साथ शानदार भूमिका निभाने के लिए उत्साहित हूं। यह टेढ़ा साल बैटमैट ही अद्भुत हो रहा है, क्योंकि मैंने फैली बार मा नीति सिंह कौर पर के साथ अपनी तस्वीर साझा की थी। इसके बाद एक कलाकार ने राणीबर के साथ फ़िल्म 'रामायण' का हिस्सा हो गया। रामायण में राणीबर कौर के साथ शानदार भूमिका निभाने के लिए उत्साहित हूं। अजिंवय देव भी नितेश तिवारी की फ़िल्म 'रामायण' का हिस्सा हो गया। रामायण में राणीबर कौर के साथ शानदार भूमिका निभाने के लिए उत्साहित हूं। अजिंवय देव भी नितेश तिवारी की फ़िल्म 'रामायण' का हिस्सा हो गया।

## नितेश तिवारी की रामायण में हुई इस कलाकार की एंट्री

हिस्से होंगे। उन्होंने एक पोस्ट साझा कर खुद इस बात की पुष्टि की है। फ़िल्म में भागवन राम और माता सीता के किरदार में राणीबर कौर और सान्या कौर के लिए एक अंजीव ने राणीबर कौर के साथ तस्वीर साझा कर लिखा, तो अब इस फ़ॉटो पर स्पैशियल कर्ट ने जारी कर दिया है। अजिंवय देव के साथ तस्वीर साझा कर लिखा है। हाल ही में शामिल होने की शृंखला गैर्ड भूमिका निभाने के लिए उत्साहित हूं। यह टेढ़ा साल बैटमैट ही अद्भुत हो रहा है, क्योंकि मैंने फैली बार मा नीति सिंह कौर पर के साथ अपनी तस्वीर साझा की थी। इसके बाद एक कलाकार ने राणीबर के साथ फ़िल्म 'रामायण' का हिस्सा हो गया। रामायण में राणीबर कौर के साथ शानदार भूमिका निभाने के लिए उत्साहित ह



